

Original Article

भाषा विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का योगदान

डॉ. अशोक मुरलीधर घोरपडे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

अहमदनगर कॉलेज, अहिल्यानगर, महाराष्ट्र

Email - ashokmghorpade@gmail.com

Manuscript ID:

सारांश –

JRD -2026-180329

ISSN: 2230-9578

Volume 18

Issue 3(B)

Pp. 120-123

March - 2026

Submitted: 01 Mar. 2026

Revised: 12 Mar. 2026

Accepted: 24 Mar. 2026

Published: 31 Mar 2026

मानव जीवन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) का प्रभाव बढ़ रहा है। कला, विज्ञान, स्वास्थ्य, कृषि, भाषा आदि विविध क्षेत्रों में एआई अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रहा है। भाषा विकास संबंधी एआई की भूमिका आधुनिक संदर्भ में उल्लेखनीय है। भाषा संप्रेषण के साथ विचार, भावना एवं संस्कार को भी अपनी गोद में लेती है। एआई के कारण भाषा संबंधी कार्यों में सहजता, सरलता एवं गतिशीलता निर्माण हो रही है। जैसे-लेखन, मानकीकरण, अनुवाद, वाणी पहचान आदि। एआई से लेखन के टंकण के स्तर पर आसान हो रहा है, तो सृजनात्मक स्तर पर विवाद का कारण बन सकता है। कोई भी तकनीक नई रूप से सामने आ जाती है तो उसके गुण एवं दोष होते हैं। एआई के माध्यम से भाषा का विकास हो रहा है। इस विकास के साथ समस्याएँ एवं संभावनाएँ भी हैं। एआई का प्रयोग करते समय हमें नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का ध्यान रखना आवश्यक प्रतीत हो जाता है।

बीज शब्द : एआई, भाषा, शिक्षण, संप्रेषण, मशीन, अनुवाद, संवेदना, नैतिकता।

मानव जीवन में भाषा विकास का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। ज्ञान-विज्ञान के साथ मानव, समाज एवं संस्कृति को जोड़ने का कार्य भाषा से संभव हुआ है। प्रचलित सभी भाषाओं की संरचना समाज द्वारा हमेशा परिवर्तित होती रही है। विचारों, भावनाओं और ज्ञान-विज्ञान के आदान-प्रदान का माध्यम भाषा रही है। भाषा पर समाज के साथ प्रदेश, राजनीति, धर्म, आर्थिक, तकनीकी, काल आदि का प्रभाव दिखाई देता है। इसमें कुछ भाषाओं के प्रयोग करने वाले लोगों में विस्तार हुआ, तो कुछ भाषाओं के प्रयोग करने वाले लोग कम होते जा रहे हैं। भाषा में ज्ञान, विज्ञान, समाज, सभ्यता-संस्कृति, नैतिकता, मूल्य आदि का संचय पाया जाता है। आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी पकड़ मजबूत करती जा रही है। एआई विविध क्षेत्रों के साथ भाषा एवं शिक्षा में अनेक चुनौतियाँ एवं संभावनाओं के साथ उभरकर सामने आ रही है। मौखिक, लिखित और सांकेतिक भाषा का उपयोग मनुष्य के लिए हर क्षेत्र में होता है। विचार, भावना, तर्क, कल्पना, दैनिक व्यवहार, शिक्षा, ज्ञान, प्रशासनिक कार्य, साहित्य, कला, संस्कृति, तकनीक, व्यवसाय आदि में भाषा प्रयोग पाया जाता है। एआई ने भाषा के ध्वनि, शब्द, वाक्य एवं अर्थ को समझने- समझाने के क्षेत्र में योगदान दिया है। इस कारण भाषा के व्यावहारिक एवं सृजनात्मक प्रयोग में भी एआई की उपस्थिति दृष्टिगोचर हो रही है। इस लेख के माध्यम से हम भाषा विकास में एआई का महत्व, योगदान एवं प्रभाव पर विवेचन करते हुए संभावनाओं तथा चुनौतियों को भी समझेंगे।



Quick Response Code:



Website:

<https://jrdrvb.org/>

DOI: 10.5281/zenodo.21157456



Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/) Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

Address for correspondence:

डॉ. अशोक मुरलीधर घोरपडे सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, अहमदनगर कॉलेज, अहिल्यानगर, महाराष्ट्र

How to cite this article:

घोरपडे, अशोक. मुरलीधर. (2026). भाषा विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का योगदान. *Journal of research and development*, 18(3(B)), 120-123.

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21157456>

भाषाविज्ञान के अंतर्गत एआई का महत्व विशेष रहा है। एआई प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के माध्यम से ध्वनि, अक्षर, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ, शैली तथा व्याकरण के संबंधों को डिकोड करता है। एआई भाषा के प्रतिमानों को पहचानने में अपनी योग्यता विकसित कर रहा है। डेटा-विश्लेषण में एआई ने क्रांति कर दी है। भाषा सीखने में एआई ने व्यक्तिगत स्तर पर सामग्री का निर्माण करते हुए पहल की है। इसलिए भाषा विज्ञान और एआई का संबंध निरंतर बना रहेगा, क्योंकि भाषा बहता नीर है। भाषा के बदलते स्वरूप को जानने हेतु एआई को भी समय एवं मानव के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा। एआई के संबंध में जब भाषा विकास पर विचार किया जाता है, तब कोई नई भाषाओं का निर्माण करना यह अपेक्षित नहीं होना चाहिए। किसी भाषा के शब्दों के विस्तार, व्याकरण का परिष्कार, उच्चारण में बदलाव, अर्थ परिवर्तन के कारण, लेखन में गति, अभिव्यक्ति-शैली में नयापन आदि बातों भाषा विकास के संदर्भ में विचार करना आवश्यक है। भाषा का विकास सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सत्ता, काल और ऐतिहासिक आदि से भी संबंधित रहा है। 21 वीं सदी में भाषा विकास में तकनीकी का संबंध आ जाता है। आज एआई की तकनीक दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति कर रही है, इसका प्रभाव विश्व की सभी भाषाओं पर हो रहा है। इस प्रभाव को विविध दृष्टिकोण से जब समझते हैं, तो एआई से भाषा का अंतर बाह्य रूप पर असर हो रहा है। भाषा की अक्षर एवं लिपि में सुसुत्रता निर्माण हुई है। नई शब्दावली, भाषा का व्यावहारिक प्रयोग, संदर्भ के अनुसार अर्थ की विविधता, लेखन में गतिशीलता, सृजन में सहायक भूमिका, अनुवाद में समानार्थी शब्दों की उपलब्धता आदि विभिन्न प्रकार से भाषा में बदलाव हुए हैं, जिसमें एआई का योगदान स्वीकार करना पड़ता है। कंप्यूटर विज्ञान का कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक अंग है। सोचना, लिखना, बोलना, गतिशील कार्य करना, समस्याओं पर निर्णय करना, समाधान खोजना आदि मनुष्य के कार्य एआई मशीनों द्वारा किए जा रहे हैं। एआई के अंतर्गत मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, प्राकृतिक भाषा संसाधन आदि प्रमुख घटक आ जाते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता में एक ऐसी तकनीक है, जिसमें मानव की तरह भाषा का प्रयोग करने में मशीन को सक्षम बनाया जा रहा है। मशीन में उपलब्ध डेटा के आधार पर भाषा का प्रयोग किया जाता है। कई जटिल भाषा के प्रयोग डीप लर्निंग के माध्यम से हो रहे हैं। इंसान की भाषा पहचानना, समझना और उसका विविध रीति से विश्लेषित करते हुए भाषा को एक संस्कार देने क्षमता प्राकृतिक भाषा संसाधन से संभव हो रही है। इसमें एआई के माध्यम से भाषा का विश्लेषण करते हुए नई सामग्री निर्माण करने की प्रक्रिया की जाती है। प्राकृतिक भाषा संसाधन में मानवीय भाषा का अर्थ, विश्लेषण, अनुवाद, सारांश, विस्तार एवं लेखन संबंधित कार्य एआई से संभव हो रहा है। इसलिए भाषा विकास डिजिटलीकरण या मशीन से अधिक गुणा बढ़ता जा रहा है। एआई के द्वारा अनुवाद का कार्य गतिशील हुआ है। अनुवाद करते हुए आज विविध एआई के एप्स के माध्यम से शब्द, वाक्य एवं संपूर्ण पाठ का अनुवाद प्राप्त हो जाता है। आज भी एआई अनुवाद दे रहा किंतु उसे मानवीय अनुभव, ज्ञान एवं विवेक की आवश्यकता हमेशा बनी रहेगी। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि मशीन या एआई का विकास कभी पूर्णता प्रदान नहीं कर सकता। एआई भाषा के क्षेत्र में अधिक से अधिक मानव की सहायता के साधन प्रदान कर रहा है, जो समय की बचत करता है, गतिशीलता लाता है, मानक भाषा का रूप प्रस्तुत करता है। विविध संदर्भ की जानकारी उपलब्ध कराता है। अनुवाद में विविध भाषाओं की जानकारी पल भर में अनुवादित कर देता है। भारतीय भाषाओं के डिजिटलीकरण में एआई की भूमिका महत्वपूर्ण है। एआई ने भारतीय भाषाओं को एक पहचान दी, यह पहचान देश एवं विदेश मंच पर उपलब्ध हो रही है। इससे सभी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में विकास हो रहा है। एआई ने मशीन अनुवाद क्षेत्र में विश्व की भाषाओं के बीच का अंतर कम कर दिया है। डिजिटल युग में किसी भी भाषा की जानकारी किसी भी भाषा में प्राप्त करना आसान बना दिया है। भाषा शिक्षण में एआई अधिक सक्षम भूमिका निभा रहा है। आज भूमंडलीकरण का दौर है। विश्व एक ग्लोबल रूप में सामने प्रस्तुत हो रहा है। इस दृष्टिकोण से विश्व की कोई भी भाषा सीखने या समझने हेतु एआई एक महत्वपूर्ण कड़ी बनता जा रहा है। एआई से भाषा शिक्षण में व्यक्तिगत सीखने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है। शिक्षा को रुचिकर बनाने हेतु शिक्षार्थियों की क्षमता को केंद्र में रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। भाषा का व्याकरण एवं मानकीकरण की दृष्टि से एआई का योगदान प्रभावी रूप से सामने आ रहा है। एआई से मौखिक भाषा डिजिटल बनाई जा रही है। बोलने से लिखित रूप तैयार हो जाता है तथा लिखित का ध्वनि में परिवर्तन होता है। भाषा के इस डिजिटल उपलब्धता का लाभ समाज को विविध वर्ग के लिए हो जाता है। भाषा के इस रूप का लाभ केवल निरक्षर लोगों तक सीमित नहीं रहा, यह लाभ शिक्षित लोगों के लिए भी विविध कार्यों के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहा है। स्पीच-टू-टेक्स्ट और तथा टेक्स्ट-टू-स्पीच के कारण दिव्यांगजनों के लिए रोजमर्रा ज़िंदगी के साथ अध्ययन एवं अध्यापन में भी लाभप्रद है। उच्चारण, लेखन, मानकीकरण और व्याकरण सुधार में एआई द्वारा कमियों संबंधी सुधार भी बताया जाता है। एआई के शुद्ध एवं गतिशील भाषा लेखन में प्रवाह के साथ प्रभाव भी दिखाई देता है। एआई ने सृजन के क्षेत्र में भी अपने कदम रख लिए हैं। एआई कविता, कहानी, लघुकथा, आत्मकथा, लेख, रिपोर्ट, समाचार, पत्र आदि पर मौलिक लेखन कर रहा है। यह लेखन भाषा एवं भाव की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण हो सकता है, किंतु भविष्य में इसमें सुधार की गुंजाइश अधिक नजर आ रही है। सृजनात्मक लेखन में एआई द्वारा शब्दों के पर्याय, शैली संबंधी जानकारी, वाक्य का निर्माण, मानक शब्द आदि विभिन्न प्रकार की जानकारी लेखक को एक क्षण में उपलब्ध कराता है। एआई भाषा को

समझने के साथ लेखन में भी मदद करता है, जिसमें शब्द, वाक्य, संक्षेप, विस्तार, लेखन एवं सृजन भी किया जाता है। अभिव्यक्ति के स्तर पर विविध शैलीगत लेखन में प्रयोग किए जा रहे हैं। इससे समय की बचत, गतिशील लेखन, लेखन में शुद्धता आदि लेखक के लिए लाभदायक होता है। अनुसंधान के क्षेत्र में डेटा विश्लेषण के साथ विस्तार भी एआई की मदद से संभव हो रहा है। एआई से शोध में विविध स्तर पर लाभ हो जाता है, जैसे- सामग्री उपलब्धता, संदर्भ की खोज, लेखन की शुद्धता, प्रवृत्तियों की पहचान, दस्तावेजीकरण, संक्षेपण, विस्तार आदि। एआई से सृजन एवं अनुसंधान में सुविधा निर्माण हो रही है, फिर भी आज इस क्षेत्र में मानवीय विवेकशील मेधा को नजरअंदाज किया नहीं जा सकता है। विवेक के क्षेत्र में एआई को अधिक कार्य करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। भाषा में सरकार के 'भाषिणी' जैसे माध्यम से प्रयोग शुरू किए हैं। भारत में भाषाओं के विकास के लिए एआई योगदान महत्वपूर्ण साबित होता है। वेबसाइट तथा इंटरनेट के माध्यम से प्रादेशिक भाषाओं में भी अधिक से अधिक सूचना एवं विशेष जानकारी उपलब्ध हो रही है। भारत की विविध भाषाओं के साहित्य का डिजिटल रूप उपलब्ध किया जा रहा है। तकनीकी शिक्षा को विविध भाषा में उपलब्ध कराने में सरकार का महत्वपूर्ण प्रयास कर रही है। राष्ट्रीय भाषा संसाधन केंद्र, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन, डिजिटल इंडिया, यु.जी.सी., प्राइवेट कंपनियाँ आदि के माध्यम से भाषा एवं तकनीकी शिक्षा में परिवर्तन किए जा रहे हैं। चैट-बॉट, को-पायलट जैसे एआई टूल्स भाषा में लेखन, अनुवाद, प्रूफ-रीडिंग आदि क्षेत्र में विशेष उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। एआई मानव के लिए भाषा, संवाद, संप्रेषण, सूचना, जानकारी एवं ज्ञान में अधिक उपयोगी सिद्ध हो रहा है। एआई के द्वारा भाषा के लिए अत्यंत व्यापक लाभ हैं, किंतु इसके साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी पाई जाती हैं। विश्व में भाषाई विविधता है तो हमेशा कुछ भाषाओं को प्राधान्य दिया जाता है, तो कुछ प्रादेशिक भाषा या बोलियों को कम महत्व मिल पाता है। मानवीय समझ, विवेक या संवेदना को उचित अर्थ में पकड़ पाना पूर्णतः एआई के हाथ में नहीं जा सकता। इसलिए एआई कितना भी विकसित हो जाए, लेकिन मानव का महत्व कभी कम नहीं होगा। इसका स्पष्ट कारण ये है कि मानवीय दिमाग में परिवर्तन की सकारात्मक संकल्पना होती है, जो एआई को समझना इस समय कठिन प्रतीत होती है। भविष्य में मानवीय संवेदनाओं की पहचान एवं विवेकशील निर्णय पर एआई अधिक सक्षम बनने उम्मीद की जा सकती है। एआई मनुष्य का कृत्रिम रूप बन सकता है, लेकिन जीवित रूप तो इंसान का ही रहेगा। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि एआई का मनुष्य जीवन पर कुछ भी प्रभाव नहीं होगा। यहाँ भाषा के संदर्भ में कहा जाए तो भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। इस अभिव्यक्ति में मनुष्य जाति की सोच, अस्मिता, संस्कृति एवं संवेदना की तरंग होती है। डेटा-आधारित पक्षपात आधुनिक तकनीक में एक चुनौती है। वृष्टिपूर्ण डेटासेट के कारण एआई में भेदभावपूर्ण परिणाम आ जाते हैं। इस चुनौती का सामना करने हेतु डेटा का संतुलित मिश्रण, प्रतिनिधि डेटा का चयन, एल्गोरिदम का लगातार परीक्षण, नियमित एआई ऑडिट और समावेशी टीमों का होना अनिवार्य प्रतीत होता है। एल्गोरिदम में अधिक से अधिक पारदर्शिता लाना आवश्यक है। तकनीक की प्रक्रिया एवं परिणाम पर मानवीय निरीक्षण सुनिश्चित करने से ही हम एआई प्रणाली को पक्षपात रहित एवं भरोसेमंद बना सकते हैं। डेटा-आधारित भेदभाव का समाधान मानवीय नैतिकता एवं सार्वभौमिकता में दृष्टिगोचर हो जाता है। भारत सरकार के प्रयास द्वारा एआई के माध्यम से अनेक लुप्तप्राय जनजातीय भाषाएँ संरक्षित करने का कार्य किया जा रहा है।¹¹ इन भाषाओं का मौखिक ज्ञान भी लिखित रूप में संग्रहित किया जा सकता है। वैश्विक समाज में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान का संग्रह करना आसान हो सकता है। एआई के कारण तकनीक के साथ मानव अधिक जुड़ रहा है, लेकिन यह समन्वय केवल भौतिक विकास नहीं है, बल्कि भावनिक भी सिद्ध हो रहा है। विज्ञान का ज्ञान अलग-अलग भाषाओं में उपलब्ध है, लेकिन एआई उसे सहज तकनीक के माध्यम से सामान्य लोगों तक लेकर आ रहा है। विविध ज्ञानवर्धक अन्य भाषा के विचार हमें समझने के लिए आसान हो रहा है, जिससे ज्ञान का उपयोग एवं प्रसार-प्रचार भी हो रहा है। एआई की तकनीक से मानवीय संप्रेषण अधिक व्यापक रूप से प्रस्तुत हो रहा है। संप्रेषण को गतिशील एवं प्रभावी बनाने में एआई की अधिक मदद प्राप्त होती है। इसलिए कहा जा सकता है कि एआई के विकास से भाषा विकास में भी चार चांद लग सकते हैं। सामान्य लोगों के उपयोग के लिए एआई एक वरदान के रूप में उभरकर सामने आ रहा है, इसे नज़रअंदाज करना हमारी भूल हो सकती है। एआई भाविष्य में मानवीय भाषा को समझने में अधिक सक्षम हो सकता है। एआई भाषा के उच्च एवं सामान्य प्रयोग में आमुलचूल परिवर्तन ला रहा है। इस तरह एआई भाषा को संप्रेषण के साथ-साथ ज्ञान का एक सक्षम साधन बना रहा है। अंत में कहा जा सकता है कि भाषा विकास में एआई का महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो रहा है। एआई के माध्यम से भाषा लोकोपयोगी बन रही है। भाषा संप्रेषण के साथ ज्ञान-विज्ञान के प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। एआई द्वारा भाषा का उपयोग जनता तथा सरकारी कार्यों के लिए लाभदायक हो रहा है। एआई भाषा को आधुनिक दृष्टिकोण से विकसित करने में अधिक से अधिक योगदान एआई का पाया जाता है। एआई से भाषा के क्षेत्र में विविधतापूर्ण परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं, जिसमें शिक्षा, अनुवाद, अनुसंधान, संवाद, लेखन, सृजन आदि स्तर पर भाषा को अधिक व्यावहारिक रूप प्रदान किया जा रहा है। भाषा में तकनीक की सहायता से मानक रूप विकसित होने में अधिक प्रभावी मदद मिलती है। एआई की सहायता से भाषा की उपयोगिता विविध क्षेत्र में सुलभ बन जाती है। भाषा के विकास हेतु एआई की तकनीक को नैतिकता एवं मानवता के साथ समग्र विचार करते हुए निरंतर सुधार के साथ आगे बढ़ने की



Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access

ISSN : 2230-9578 | Website: <https://jrdrvb.org> Volume-18, Issue-3 (B)| March - 2026

आवश्यकता है। एआई से भाषा का विकास गतिशील, सुलभ, सूक्ष्म, व्यापक, प्रभावी एवं वैश्विक बनता जा रहा है। एआई की यह तकनीकी क्रांति भाषा विकास हेतु परिवर्तनकारी शक्ति बन सकती हैं। एआई को वर्तमान में भले ही चुनौतियाँ हो सकती हैं, लेकिन भविष्य में भाषा को सक्षम एवं प्रभावशाली माध्यम बनाने में एआई का महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

संदर्भ -

ⁱ <https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp09/chapter/संगणनात्मक-भाषाविज्ञान-औ/>

ⁱⁱ <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2162338®=3&lang=2>